रोग कीट नियंत्रणः

चोरा की फसल व पौध अक्सर रोग व कीट से मुक्त होती है। पर्वतीय क्षेत्रों में अमूमन यह रोग मुक्त होते हैं, लेकिन निचले भागों में अधिक सिंचाई व वर्षा से खेतो में पानी खडा होने से इनकी जडों में कई फफूंद लग सकते हैं। इसलिए पानी की निकासी का उचित प्रवंध रखें। इसके अलावा इसके बीजों में भी फफूंद लगते हैं जिससे यह खराब हो जाते हैं इस अवस्था में बीमारी की रोकथाम के लिए जैविक फफूंदी नाशक का उपयोग करें।

जड़ की धुलाईः

चौरा की जडों को लैंगिक अवस्था खत्म होने के बाद प्रायः सितम्बर– अक्तूबर के महिनों में मिट्टी से निकाला जाता है। इस समय इनकी उत्पादकता अधिक होती है। इनकी जडों को अच्छी तरह पानी से धो कर छाया में सुखा लिया जाता है। सूखी जडों में 8–10 प्रतिशत तक नमी होनी चाहिए। इनकी जड़ों को पीस कर पाउडर भी बनाया जा सकता है। इनकी जडों एवं बीजों का भण्डारण नमी रहित तथा ठण्डे तापमान (<5^{0}C) वाले स्थानों में ही करना चहिए जिससे इनमें लम्बे समय तक औ धीय गुण एवं जीवितता बनी रहे।

ऊपजः

चौरा की फसल उगाने से हम प्रति एकड़ 8–9 क्विंटल उपज प्राप्त कर सकते हैं। कायिक विधि से उगाई गई फसल दो वर्ष में तैय ार होती है तथा बीजों द्वारा लगभग तीन वर्ष में चौरा की फसल तैयार की जा सकती है। फसल तैयार होने पर जडें इस प्रकार निकलें कि पौधा सुरक्षित रहे तथा मुख्य तने से लगी जडे (डिस्क) दोबारा रोपित कर दें। इस प्रकिंया द्वारा चोरे की फसल निरन्तर तैयार की जा सकती है। जडों को अच्छी तरह साफ करके तथा छाया में सुखाकर ही भण्डारण करना चाहिए। इनकी जडों का बाजार मूल्य लगभग 60 रू० से लेकर 100 रूपये प्रति किलोग्राम है।

औशधीय गुणः

इसकी जडों ने वाष्पशील तेल, वेलेटिक अम्ल, ऐंजेलिक अम्ल तथा एंजेलिसिन नामक रेजिन पाया जाता है। इसकी जडों का प्रयोग दीपन–पाचन, उदररोग, कब्ज, कफनाशक, उल्टी, मूत्रजनन संबंधी रोग एवं वातरोगों में होता हैं। इसकी जडों का इस्तेमाल सुगंधित मसाले के तौर पर खाने में भी किया जाता है। इसकी जडों के पाउडर को गर्म पानी से निलाकर बच्चों के पेट दर्द को दूर करने के लिए किया जाता है। यह उल्टी में भी लाभप्रद है। यूरोपियन ऐजैलिका तेल का प्रयोग मिढाई बनाने में, मद्य को सुगन्धित्त करने तथा इत्र उद्योग में बडी मात्रा में किया जा रहा है।

अधिक जानकारी हेतू इस पते पर संम्पर्क करें:–

मुख्य परियोजना निदेशक

JICA सहायता प्राप्त

'हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना'

पॉटरस हिल, समरहिल, शिमला–5 हिमाचल प्रदेश

दूरभाषः 0177–2832217

ई–मेलः cpdjica2018hpfd@gmail.com, himjadibuticell@gmail.com

चौरा

(*Angelica Glauca Edgew*)

परिचय :

इसका वनस्पत्तिक नाम एनजेलिका ग्लोका (Angelica Glauca Edgew) है तथा यह पौधा एपीयसी (Apiaceae) कुल से संबंध रखता हैं। यह पौधा पूर्वी एशिया से लेकर पश्चिमी हिमालय के क्षेत्रों से पाया जाता है। भारत में यह कश्मीर, हिमाचल और उत्तराखण्ड में 1800–3500 मी० कीं उचांई वाले क्षेत्रों से पाया जाता है। हिमालय में यह पौधा शीतोष्ण, छायादार व नमी वाले पहाडी क्षेत्रों में प्राकृतिक रूप से मिलता हैं। हिमाचल प्रदेश में मुख्यतः यह पौधा मण्डी जिला (शिकारी देवी, नागरू पशुविहार), कांगडा (धौलाधार के क्षेत्रों, बडा भंगाल, छोटा भंगाल), चंबा (कालाटोप, सतरून्दी, सुरल बटोरी), कुल्लू (सेरांज, थाच, वंशेरूथार, हामटा, छतरू एवं जीएचएनपी), लाहौल स्पिति (रोहतांग पास, कोकसर, पिन घाटी इत्यादि), शिमला (हाटु शिलारू, नारकंडा, काशाघाट, चांशल, दरकाली, पांजु, चूडधरार एवं धोलाबागी) और किन्नौर जिला (रक्छम–छितकुल वन अभ्यारण, रूपी बाबा वन्य अभ्यारण, निचार एवं बरी कंडा, लिप्पा असरंग वन्य अभ्यारण एवं पूंह तहसील के उंचाई वाले क्षेत्रों) में पाया जाता है।

आकारिकी:

यह एक बहुवर्षीय भुमिकन्दयुक्त, सुगन्धित मूलवाली भााकीय वनस्पति है। इसका तना सीथा, भीतर से खोखला तथा 1–2 मी० ऊँचा होता है, इसके पत्ते द्विपिच्छाकार, अण्डाकार एवं तटदन्तुर होते हैं। इसके फूल सफेद रंग के, छत्रक का आकार लिए हुए शाखाओं पर लगे होते हैं। इसके बीज संख्या में अधिक, चपटे, रेखाकर तथा मसलने पर सुगन्ध देते हैं। बीजों का रंग पकने पर भूरा होता है। इसकी जडें गांठेदार तथा 30 सें0मी0 से अधिक लम्बी एवं उग्रसुगन्धित होती है। जडें भूरी–वादाम रंग की होती हैं।

ऋतुजैविकी:

यह बहुवर्षीय वनस्पति है जिस पर पाले का असर नहीं होता है। इनका परागण कीटों द्वारा होता है। यह पौधे स्वयं निषेचित होते हैं। इसके पौधों में नए पत्ते अप्रैल में आते हैं। इनका पुष्प काल जुलाई–अगस्त होता है। परागण होने के पश्चात इनमें फल व बीज बनते हैं। इसके फल अगस्त से अक्तूबर के बीच में लगते हैं। बीज सितंबर से अक्तूबर तक परिपक्व हो जाते हैं तथा बाद में इनका संग्रह कर लिया जाता है।

जलवायु:

इस औषधीय पौधे को हिमालय के शीतोष्ण क्षेत्रों में 1800 मी0 से 3000 मी0 तक की ऊँचाई पर नमी वाले क्षेत्रों में सुगमता से उगाया जा सकता है, इसकी खेती के लिए गर्मियों में अधिकतम तापमान 25 से 30 डिग्री सै० तथा सर्दियों में न्यूनतन तापमान 1 से 5 डिग्री सै० तक उपयुक्त होता है। इसकी फसल उन क्षेत्रों ने उगाई जा सकती है जहाँ बर्षा की मात्रा 1,500 मि० मी० से 2,000 मि० मी० तक होती है। कम नमी वाली भूमि में इसकी खेती करना कठिन होता है परन्तु जहाँ हयूमस/ जैविक पदार्थ की बहुतायत हो वहाँ इसे आसानी से उगाया जा सकता है। इस पौधे को छायादार एवं नमी वाली दोमट भूति की आवश्यकता होती है। इस तरह की भूमि में यह पौधा सुगमता से उगता है। मिटटी में जल की मात्रा अधिक होने पर इनकी जडें गल जाती हैं। इसकी खेती के लिए दोमट मिटटी सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। हिमाचल प्रदेश में जलवायु अनुकूल होने की वजह से इसकी खेती की सुनहरी संभाबनाएं हैं तथा वहुत ही आसानी से कृषक इस महत्त्वपूर्ण पौधे की फसल अपने खेतों में अथवा बागीचों में उगा सकते हैं।

चौरा का प्रजननः

चौरा के पौधों को लैंगिक व कायिक दोनों विधियों से तैयार कर सकते हैं। लैंगिक विधि में इस पौधे का जनन हम बीजो द्वारा कर सकते है तथा कायिक विधि में इसके जड़ के नोड से तैयार कर सकते हैं। चौरा की पौध बनाने के लिए बीज ही उत्तम साधन है। बीजों का अंकुरण ताजे व परिपक्व बीजों से अधिक होता है परन्तु लम्बे समय तक भण्डारित किये बीजों में अकुरण की सम्भावना कम होती है वयोंकि भण्डारित किये बीजों की जीवितता लगातार घटती रहती है। बीज सितम्बर–अक्तूबर में इक्टठा किया जाता है। इसके बीजों की बुआई नवम्बर–दिसम्बर माह में करें वयोंकि बर्फ में दबे रहने से बीजों की सुप्तावस्था अवधी भी पूरी हो जाती है तथा वर्फ पिघलने से इसे अंकुरण के लिए पर्याप्त नमी भी मिल जाती है। मई–जून के महीने में अंकुरण क्यारियों में छाया की व्यवस्था होनी चाहिए। कम ऊंचाई वाले क्षेत्रों तथा खुली पौधशालाओं में 35 प्रतिशत या 50 प्रतिशत छाया की अवश्यकता होती है।

खेती की तैयारीः

व्यापाारिक एवं औषधीय गुणवत्ता की दृष्टि से यह उपयोगी वनौषधी है। चौरा की कृषि के लिए खेतों को अच्छी तरह से तैयार करना चाहिए। खेतों या क्यारियों को सबसे पहले अच्छी तरह से जुताई कर लेनी चाहिए तत्प चात् मिट्टी को बारीक तथा महीन बनाना चाहिए। उसके बाद गोबर की खाद को मिट्टी में अच्छी तरह मिलाकर डाल देनी चाहिए। बीजों की बुआई से पूर्व भी खेत या क्यारी की जुताई अच्छी तरह कर लें ताकि खाद उसमें अच्छी तरह मिल जाए। क्यारी का क्षेत्रफल 5– 10 मी० 2 हो जोकि खेत के भाग से कम से कम 15 सेमी ऊँची हो। क्यारियों में पानी की निकासी का उचित प्रबंध करना चाहिए।

बीजाई एवं रोपने का समयः

बीजों की बुआई नवम्बर तक कर लें। इस समय इनकी अंकुरण क्षमता अधिक होती है वयोंकि वर्फ में दबे रहने से बीज की सुप्तावस्था अवधि भी पूरी हो जाती है तथा इसे पर्याप्त नमीं भी मिल जाती है। वंसत में लगाए गए बीजों की अंकुरण क्षमता कम होती है। गांठदार जडों के नोड वाले भागों से भी पौध तैयार की जा सकती है। जडों द्वारा पोंध तैयार करने में अधिक सुविधा होती है एवं सफलता का अनुपात भी बीजों के अंकुरण की अपेक्षा ज्यादा होता है। बीज से तैयार पैाध में सुडोल जड़े तैयार होने में कम से कम तीन वर्ष का समय लगता है। मूल गांठों से तैयार पौधों में सुडोल जडों को बनने में दो वर्ष लगते हैं। इस पौधे का रोपने का समय वर्शा ऋतु यानि जुलाई–अगस्त होता है।

रोपने की विधिः

चौरा की खेती बीज व जड़ के नोड द्वारा होती है। बीज बुआई के लिए प्रतिवर्ग मीटर क्षेत्र के लिए 4 ग्राम बीज चाहिए। इसके बीज पतले होते हैं इसलिए क्यारियों में 1 सें0मी० की गहराई पर लाइनों में बीजाई करें। बीजों की बुआई के बाद बीज अप्रैल में अकुरित होने लगते हैं औरे धीरे–धीरे, पत्तियां निकलती हैं। जडों द्वारा पौधा उगाने के लिए 6 सें0मी० के लगभग लम्बे जड़ के टुकडे काटे जाते हैं इन टुकडों में एक या दो आखें होनी चाहिए। अच्छी तरह से तैयार क्यारियों में आंख वाले जडों के टुकडों को मिट्टी व रेत के मिश्रण में दबा देना चाहिए। अप्रैल से सितम्बर तक इन जडों की रोपाई की जा सकती हैं। चौरा के नर्सरी में तैयार पौधों का पौधारोपण वर्षा ऋतु में पौध ाला से खेतों में करना चाहिए। खेतों एवं पौधरोपण क्षेत्र में 9 पौधे पति वर्ग मी० की दर से लगाएं। प्रथम् वर्ष में गर्मी के महीनों में चौरा की नर्सरी एवं फसल पर छाया की उचित व्यवस्था करें । 35: छाया देने वाले एग्रो ोडनेट से चौरे की नर्सरी की क्यारियों को ढकने से अच्छी जीवितता एवं बढ़ोतरी प्राप्त होती है।

खाद एवं उर्वरकः

औषधीय पौधों की गुणवत्ता बनाए रखने व उनकी उत्पादकता बढाने के लिए हमें जैव–कृषि अपनानी चाहिए। गोबर अथवा पत्तियों की खाद 15–20 टन प्रति हेक्टेयर का प्रयोग करें। आवश्यकतानुसार अन्य जैविक खाद जैसे–वर्मीकम्पोस्ट, हरी पत्तो की खाद, नीम से बने केक आदि इस्तेमाल करें। रासायनिक खादों का प्रयोग न करें क्योंकि औषधीय पौधों की कृषि जैवकि विधि अपनाकर ही करनी चाहिए ताकि उनमें औषधीय गुण विद्यमान रहें।

निराई एवं गुडाईः

पौध ाला में निराई एवं गुडाई का कार्य बहुत महत्तवपूर्ण होता है, इनसे नई उगने वाली पौध को स्थापित होने में मदद मिलती है। खरपतवार को समय–समय पर निकालने से पौधे शीघ्र विकसित हो जाते हैं चूंकि मिट्टी में मौजूद पोषक तत्त्व एवं नमी का यह पौधे भरपूर उपयोग करते हैं और खेतों में प्रत्यारोपण के लिए भी जल्दी तैयार हो जाते हैं। पौध ाला में निराई एवं गुडाई करते समय यह ध्यान रखें कि नई पौध जो कि कोमल होती है उसकी जडों को नुकसान न हो।

सिंचाईः

अक्सर चौरे का पौधा पानी के आसपास व नमीं वाले स्थानों में पाया जाता है। अतः इस पौधे के समुचित विकास के लिए मिट्टी में नमीं होना आवश्यक है। इसलिए सिंचाई समय–समय पर करना आवश्यक है। गर्मी के मौसम में कम से कम एक बार दिन में पानी देना आवश्यक है तथा सर्दियों में सप्ताह में एक या दो बार आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। खुले स्थानों में नमीं बनाए रखने के लिए इन पौधों के उचित विकास के लिए मलचिंग भी लाभदायक देखी गई हैं।